उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ुरआन पढ़ने के तरीक़े के बारे में पूछा गया

इब्ने अबी मुलैका का वर्णन है : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की किसी पत्नी से रिवायत है (अबू आमिर ने कहा , नाफ़े कहते हैं कि मेरा ख़याल है कि वह हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं) उनसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ुरआन पढ़ने के तरीक़े के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया : तुम लोग इसकी ताक़त नहीं रखते। उनसे कहा गया : हमें उसके बारे में बताएँ। तो उन्होंने ठहर -ठहर कर पढ़कर दिखाया। अबू आमिर कहते हैं कि नाफ़े ने कहा : तो इब्ने अबू मुलैका ने हमें इस तरह पढ़कर सुनाया : 'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ' यहाँ रुक गए। फिर 'अर-रहमानिर -रहीम ' पढ़ने के बाद रुक गए और 'मालिकि यौमिद्दीन ' पढ़ने के बाद रुक गए।

[सहीह] [इसे अहमद ने रिवायत किया है]

उम्मुल मोमिनीन (मोमिनों की माता) हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़ुरआन की क़िरात किस तरह करते थे ? उन्होंने उत्तर दिया : तुम लोग ऐसा नहीं कर सकते , तो लोगों ने उनसे कहा : हमें बताइए तो सही। नाफ़े कहते हैं कि इब्ने अबी मुलैका ने हमें ठहर -ठहर कर सुनाया , ताकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ुरआन पाठ का तरीक़ा बता और उसे समझा सकें। चुनांचे उन्होंने {الحَمْـــدُ لِلّـــهِ رَبِّ الْعَـــالَمِينَ} 'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन ' पढ़ा , फिर रुक गए , फिर {الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ} 'अर-रहमानिर -रहीम ' पढ़ा , फिर रुक गए और फिर {مالِكِ يَوْمِ الدِّينِ} 'मालिकि यौमिद्दीन ' पढ़ा।

http://www.sunnah.global/hadeeth/hi/show/65247